'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ७० | वाराणसी, शनिवार १३ जून, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

स्वागत-प्रवचन

रामकोट (कश्मीर) ३१-५-'५९

हम राज्यशक्ति की ओर बढ़ना चाहते हैं या लोकशक्ति की ओर ?

लोकशक्ति और राजशक्ति, ये दो शक्तियाँ पहले से काम करती आयी हैं। लेकिन अब विज्ञान का जमाना आया है, इसमें लोकशक्ति जोर करेगी और राजशक्ति कमजोर होगी। यह बात जिनके ध्यान में नहीं आयी, वे आज भी राजशक्ति के पीछे पड़े हैं।

योजना कौन बनाये ?

कल्याणराज्य में राज्य चलानेवाले लोग अच्छे हों तो प्रजा सुखी होती है और खराब हों तो प्रजा दुःखी होती है। यद्यपि यह जमाना लोक-शक्ति का है, फिर भी जैसा पुराने राजा-महाराजाओं के जमाने में चलता था, वैसा ही आज भी चल रहा है। योजना करना सरकार का काम न होकर लोगों का काम होना चाहिए। सरकार का काम है—सिर्फ मदद देना। लेकिन आज योजना सरकार करती है, पैसा भी सरकार खर्च करती है और योजना के अमल की भी जिम्मेवारी सरकार की ही होती है। इससे लोग समझते हैं कि जैसे आसमान से बारिश बरसती है, वैसे ही सरकार की तरफ से हम पर नियामतें बरसें और हमारा भला हो। लेकिन ऐसा चाहनेवाले लोग इस जमाने के लायक नहीं हैं। इस जमाने में वे टिक नहीं सकेंगे।

ताकत का केन्द्रीकरण खतरनाक

आज विज्ञान के कारण सरकार के हाथ में इतनी शक्ति आयी है, जितनी पुराने जमाने के बादशाहों के पास कभी न थी। आज पाँच मिनट में सरकार का हुक्म सारे देश भर पहुँच सकता है और एक दिन में उस पर अमल करने का बन्दोबस्त किया जा सकता है। ऐसी हालत में अगर हम सारी सत्ता सरकार के हाथों में सौंपेंगे और आज के जैसे ही रहेंगे तो फिर सरकार बहुत ताकतवर बन जायगी और हमारे हाथ में सिर्फ अपना नसीब आजमाने की बात रहेगी। इसलिए विज्ञान के द्वारा पैदा की हुई ताकतें सीधी लोगों के पास आनी चाहिए, तभी गाँवों का भला होगा। पुराने जमाने में औरंगजेब का हुक्म किसी सरदार के पास पहुँचने में ही महीने लग जाते थे, लेकिन आज क्या हो रहा है ? पाकिस्तान में जनरल अयूबखान आया तो एक ही दिन में सब पॉलिटिकल पार्टियों के कार्यालयों को ताले लग गये। क्या औरंगजेब यह कभी कर सकता था ? इस तरह आज की ताकत के सामने पुराने राजाओं की ताकत का कोई हिसाब ही नहीं है। ऐसी हालत में उस ताकत का एक मरकज में इकट्ठा होना गलत है।

कश्मीर की भूमि तैयार

हमारी लोकशक्ति लगाने की ही कोशिश चल रही है। हमें पता नहीं था कि जम्मू-कश्मीर में क्या बनेगा, लेकिन जब से हम यहाँ आये, तब से देख रहे हैं कि यहाँ के लोग तैयार हैं। गाँव-गाँव के लोग शान्ति-सेना में नाम दे रहे हैं। शान्ति-सेना बनाने के मानी हैं गाँववाले गाँव का कारोबार खुद सम्हालें, गरीबों के दुःख सारे गाँव के दुःख बन जायँ और जब तक दुःखियों को सुखी नहीं बना लिया जाय, तब तक किसी को चैन न आये।

हमें सरकार से मदद माँगने का हक है, लेकिन योजना हमारी हो और सरकार सिर्फ मदद दे। आज सरकार ही सब कुछ करती है और लोग जड़ बने हुए हैं। लोगों में ऐसी जड़ता आये तो इस जमाने के लिए शोभा नहीं देगी। आज तालीम भी सरकार के हाथ में है और शिक्षक नौकर की हैसियत में हैं। इससे तालीम कुंठित हो जायगी। लेकिन लोग इसको समझते नहीं। वे सरकार से कहते हैं कि हम स्कूल के लिए मकान बना देंगे और स्कूल आप चलायें। हम बीमार पड़ेंगे और आप दवाखाना खोलिये। क्या यह भी कोई जिम्मेवारी का बँटवारा है ? यह कोई आजादी नहीं है। लोगों को लगता है कि आजादी का माने है—हमारी जातवालों की सरकार। पाकिस्तान में मुसलमान की हुकूमत है तो वहाँ के लोग समझते हैं कि हम आजाद हैं। चीन में चीनी की हुकूमत, जापान में जापानी की हुकूमत है तो वहाँवाले समझते हैं कि हम आजाद हैं। यह आजादी नहीं है। आजादी के मानी हैं, राज्य का जनता के हाथ में होना।

जनता और सरकार का सम्बन्ध

सरकार एक हाथ है और जनता दूसरा हाथ। दोनों हाथ जुड़ते हैं, तब ताली बजती है। आज सरकारवाले शिकायत करते हैं कि पंचवर्षीय योजना के काम में लोगों की तरफ से सहयोग नहीं मिल रहा है। इसलिए लोगों की तरफ से सहयोग मिलना चाहिए। लोगों का हाथ जबर होना चाहिए और सरकार का हाथ जोर। ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

सांढासाल (बड़ोदा) ता० २६-१०-'५८

भक्त की बात 'सर्व' की ही, 'असर्व' की नहीं

बड़ौदा जिले में पाँच-छह दिन बिताकर मैं पंचमहाल जिले में गया था। आज पुनः इस जिले में प्रवेश हो रहा है। यों तो बड़ौदा जिले को मुझे अपना ही जिला कहना चाहिए, क्योंकि मेरा बचपन यहीं बीता, मेरा हाईस्कूल और कालेज का अध्ययन भी यहीं हुआ, लेकिन इसकी ज्यादा कीमत नहीं। बड़ौदा की सेण्ट्रल लाइब्रेरी का मैं खूब उपयोग करता था। तभी से बड़ौदे के साथ मेरा आत्मीय संबंध बन गया। मैं तो पढ़ाई के दरमियान यहाँ सिर्फ १० साल रहा हूँ, किंतु मेरे पिताजी ४० वर्ष यहाँ रहे हैं, अतः यह मेरा वतन ही कहा जायगा और इसीलिए मुझे इससे कोई वासना (अपेक्षा) रहना भी स्वाभाविक ही है। इस तरह की कोई वासना (अपेक्षा) मुझे हो तो आप माफ कीजिये।

मेरी वासना पूरी करें

इसका मतलब यह नहीं कि वासना रखना कोई अच्छा लक्षण है। वासना रखना कोई अच्छा लक्षण नहीं, यह मैं भी जानता हूँ। फिर भी मैं यह नहीं चाहता कि आप मेरी वासना पूरी न कर मुझे मुक्त कर दें। ज्ञान से वासना मुक्त हो जायेगी, ऐसा वासना-मुक्ति का सीधा उपाय मत बताइये। बल्कि उस वासना को पूरा करने की जिम्मेवारी आप स्वयं उठाइये। मैं कोई बहुत बड़ी वासना नहीं रखता। छोटी सी बात है और वह है प्रेम की बात। बड़ौदा शहर और अन्य गाँवों की सेवा के लिए मुझे दो सौ सेवक चाहिए। जिसे मैं भक्तिसेना कहता हूँ, उसमें दाखिल होकर लोगों की निरंतर सेवा करने का व्रत लेनेवाले दो सौ सेवकों की मेरी माँग है। ये दो सौ सेवक लोगों को शारीरिक विपत्ति में मदद करेंगे, उन्हें आश्वासन देंगे। वे लोगों को भूदान-ग्रामदान का विचार समझायेंगे, साहित्य का प्रचार करेंगे, शरीर-श्रम करेंगे और सर्वथा पक्षमुक्त होंगे। उन्हें किसी भी पक्ष में आसक्ति नहीं होगी। किसी भी धर्म या पक्ष से लगाव न रहेगा। निर्भय, निष्पक्ष, निर्वैर, पंथातीत और मानव-मात्र की सेवा करने की प्रतिज्ञा करनेवाले दो सौ सेवकों की मेरी माँग है। बड़ौदा जैसे संस्कारी जिले के लिए यह कोई ज्यादा माँग नहीं, अतः यह माँग आपको पूरी करनी चाहिए।

घर-घर सर्वोदय-पात्र हों

इन सेवकों के काम के लिए तथा अहिंसा और शान्ति की बुनियाद पर समाज-रचना के लिए आपकी सक्रिय सम्मति होनी चाहिए। आपकी ओर से अशान्ति का काम नहीं होगा, शान्ति की उपासना होगी, इसके प्रतीकस्वरूप प्रत्येक घर में सर्वोदय-पात्र होना चाहिए और उसमें घर के सबसे छोटे सदस्य के हाथों से नियमित रूप से अनाज डलवाना चाहिए।

आज लड़की ने मुझसे पूछा कि सर्वोदय-पात्र में अनाज कब तक डालते रहेंगे? मैंने बताया कि जब तक भोजन का कार्यक्रम चलता रहेगा। अगर भोजन का कार्यक्रम जन्म भर चले तो सर्वोदय-पात्र में अनाज डालने का कार्यक्रम भी जन्म भर चलना चाहिए। उसे मानव-सेवा का, अहिंसा का व्रत समझना चाहिए। अहिंसा के विचार के लिए हमारी सम्मति का प्रतीक-स्वरूप यह सर्वोदय-पात्र है, ऐसा समझना चाहिए। फिर आगे क्या करना है, यह हमारे रविशंकर महाराज और नारायण देसाई सोच लेंगे। यह जिम्मेदारी उन पर सौंप देनी चाहिए। सर्वोदय-पात्र के इस अनाज का उपयोग शान्ति-सेना की स्थापना के लिए, शान्ति-सैनिकों के शिक्षण के लिए और उनके परिवार के पोषण के लिए होगा।

नारायणी शक्ति प्रकट करें

यहाँ जो बहनें बैठी हैं, उन्हें इस विचार को उठा लेना चाहिए। विशेषकर ये कार्यक्रम बहनों के लिए ही हैं। प्रत्येक घर में जाकर बहनें इस विचार को समझायें। वैसे तो पूरे भारत से मुझे आशा है, लेकिन अभी मैं खास कर बड़ौदा जिले के लिए कह रहा हूँ। इस जिले में मेरा हक है और वह उसे मान्य करना चाहिए, क्योंकि दूसरे प्रांत और जिलेवाले भी मेरा यह हक मान्य करते हैं। यहाँ कुछ घरों में मेरा प्रवेश हो, इससे काम नहीं चलेगा। यहाँ तो शत-प्रतिशत मतदान होना चाहिए। अलग-अलग पार्टियोंवाले तो एक-दूसरे से अधिक मत (वोट) मिलने पर संतोष कर जाते हैं, लेकिन मेरा ऐसा नहीं है। सर्वोदय-विचार के लिए शत-प्रतिशत मतदान होना चाहिए। अगर एक भी घर खाली रहे तो कार्य पूरा नहीं हुआ है, ऐसी ही भावना होनी चाहिए। सबकी इच्छा ही नारायण की शक्ति है। जिस कार्य में शत-प्रतिशत आदमी मदद करते हैं, उसमें सौगुनी शक्ति ही नहीं, सहस्रगुनी शक्ति प्रकट होती है और उसीको 'नारायणी शक्ति' कहते हैं। पूरा नरसमूह एकत्र होता है, तभी उसमें नारायण शामिल होते हैं।

गांधीजी ने भारत की एकता के लिए खूब प्रयत्न किये, लेकिन उन्हें शत-प्रतिशत सफलता नहीं मिली। मुसलमान और हिन्दू—दोनों अलग-अलग हो गये और कितने ही विभाजन हुए। स्वराज्य के साथ कितनी ही हिंसा हुई। स्वराज्य मिला, लेकिन वह शत-प्रतिशत नहीं मिला। कारण, उसमें नारायण की शक्ति प्रकट होने के लिए नरसमुदाय की शक्ति प्रकट नहीं हुई। आज भी उसीके कारण तकलीफ उठानी पड़ रही है। आज भी देश में कहीं समाधान नजर नहीं आता। कितने ही झगड़े, कितने ही क्लेश और कितने ही पंथ दिखाई पड़ते हैं। क्योंकि हमने अधिक से अधिक लोगों को तो एकत्र कर लिया, पर सबको एकत्र नहीं कर पाये हैं। भगवान कृष्ण सबको एकत्र कर पाये थे। उन्होंने गोवर्धन पर्वत को उठाने के लिए आबाल वृद्ध, स्त्री-पुरुष सभी को अपना हाथ लगाने के लिए प्रेरित किया था। सबके प्रयत्न के साथ उन्होंने अपनी तर्जनी लगायी, तभी उसमें से नारायणी शक्ति प्रकट हुई। वैसे तो भगवान कृष्ण अकेले भी उस पर्वत को उठाने में समर्थ थे, परन्तु जब तक सबने मिलकर अपनी शक्ति नहीं लगायी, तब तक वह पहाड़ नहीं उठा। भगवान यह देखना चाहते हैं कि मनुष्यों के हृदय एक होते हैं या नहीं। अतएव बहुत-से घरों में सर्वोदय-पात्र रख देने से काम नहीं चलेगा। गाँव के प्रत्येक घर में सर्वोदय-पात्र प्रेमपूर्वक रखा जाना चाहिए।

'रणछोड़' के राज्य में सर्वत्र ग्रामदान होगा

लोग पूछते हैं कि ग्रामदान, भूदान या मालकियत मिटाने की बात तो बड़ी बात है। इतनी ऊँची बात को छोड़कर आप एक मुट्ठी अनाज की बात कैसे करने लग गये? आपने हार कैसे मान ली? इसका जवाब गुजराती में समझाना तो बड़ा ही आसान है। मैं अब 'रणछोड़' (कृष्ण को 'रणछोड़' भी कहते हैं) हो गया हूँ। कभी-कभी रण याने मैदान छोड़कर भागने में भी बुद्धिमानी और व्यवहार होता है। कृष्ण भगवान वृन्दावन छोड़-

कर भागे और द्वारिका में आ बसे। दुनिया को भगवान का ऐसा नाम (रणछोड़) कहीं सुनने को नहीं मिलता। भगवान का 'रणजीत' विशेषण ही अधिक उपयुक्त है। परन्तु 'रणछोड़' विशेषण तो गुजरात के भगवान का खास विशेषण है। इसलिए अभी मैं 'रणछोड़' हो गया हूँ। ग्रामदानरूपी रण छोड़कर भागा हूँ और सर्वोदय-पात्र का विचार रखता हूँ। साथ-साथ शांति-सेना की स्थापना की भी बात है ही। शांति-सैनिक आज की अवस्था में भी मालिक का रक्षण करेगा। मालकियत मिटाने की प्रतिज्ञा होने के बावजूद जब तक मालकियत नहीं मिटती है, तब तक मालिक का बाल भी बाँका न होने की जिम्मेदारी भी शांति-सैनिक पर ही रहेगी। तभी उन मालिकों का हृदय पिघलेगा और उन्हें समझ में आयेगा कि ये लोग हमारे हित की ही बात कर रहे हैं। इस तरह रणछोड़ का काम होने पर पूरे हिन्दुस्तान में भगवान का राज्य आयेगा और सब गाँवों के ग्रामदान हो जायेंगे।

यह रण छोड़ना रणजीतपन से मधुर

किसान-संघ के लोग मेरे पास आये थे। उन्होंने कहा कि 'ग्रामदान से हमें डर लगता है।' मैंने कहा कि 'ग्रामदान से डर लगता है तो यह ग्रामदान मुझे नहीं चाहिए।' पहले आप लोग निर्भय हो जायँ। ग्रामदान तो सबको निर्भय होने के लिए है। यदि भूदान का डर न लगता हो तो उसे ही करते रहें, ग्रामदान से भय लगता है तो उसे रहने दें। जब आप लोग भयमुक्त होंगे और मुझसे कहेंगे, तभी मैं ग्रामदान की बात करूँगा। मैं रण छोड़कर आया हूँ और गुजरात इसे भली-भाँति समझता है। मेरा रण छोड़ना 'रणजीतपन' से भी अधिक मधुर है। इस विचार की तो सिर्फ नींव डाली जा रही है। इमारत खड़ी करना और मंदिर बनाना तो अभी बाकी है। भूदान-ग्रामदान का विचार लोग समझे हैं या नहीं, यह देखने के लिए ही यह कार्यक्रम हुआ और जो भी जमीन मिली, उसका वितरण भी किया गया। उस विचार का प्रसार होने के बाद कुछ लोगों के हृदय में प्रीति उत्पन्न हुई तो किसी को भय भी अवश्य ही हुआ। सच्चा काम तो प्रीति निभाना और भीति को छोड़ने का है। इसलिए सेवकों को बारबार लोगों के पास पहुँचना चाहिए। सेवक को देखकर लोगों को आनन्द होना चाहिए। सेवक कैसा काम करता है, इसका पता तभी चलेगा, जब कि लोगों को भय न रहे और तभी खुले दिल से ग्रामदान भी होंगे। फिर तो गुजरात में एक भी गाँव बिना ग्रामदान के नहीं रहेगा, यह निश्चित है।

प्रार्थना-प्रवचन

इसलिए अब इस काम के लिए सेवक मिलने चाहिए और सर्वोदय-पात्र का काम शत-प्रतिशत होना चाहिए।

शत-प्रतिशत मतदान क्यों?

आप सब लोगों को लगता होगा कि यह कितना महत्त्वाकांक्षी मनुष्य है! आज के लोकतंत्र के युग में बहुमत से काम चलता है। सौ में से ५१ मत प्राप्त करने पर संतोष हो जाता है। तब यह भला आदमी सौ प्रतिशत मतदान चाहता है। निस्सन्देह आपकी यह बात सही है कि यह आदमी महत्त्वाकांक्षी है। लेकिन सर्वोदय-विचार के लिए सौ प्रतिशत मतदान क्यों नहीं हो सकता, इसका कोई कारण मुझे बताइए। दूसरे सब विचार फूट डालनेवाले हैं, पर यह विचार परस्पर सबको जोड़नेवाला है। फिर इसमें सौ प्रतिशत मतदान न मिलने का कोई कारण मेरी समझ में नहीं आता। यह संभव है कि हम विचार लोगों तक पूरी तरह न पहुँचा पायें, लेकिन अगर लोगों तक यह विचार पहुँच जाय तो सर्वोदय-पात्र के लिए लोगों की संपत्ति मिलने में तनिक भी सन्देह नहीं।

बहुमत के सिद्धांत से अगर ५१ मत मिलते हैं तो अपने पक्ष में अधिक मत होने से मुझे अहंकार हो जायगा, यह निश्चित है। लेकिन अगर सौ प्रतिशत ही मतदान मिलता है तो वहाँ दूसरा पक्ष ही नहीं रहेगा और इसलिए अहंकार पैदा होने का सवाल ही मिट जायेगा। यह सब ज्ञान की बात नहीं, प्रेम की है। अतः गाँव के सभी घरों में सर्वोदय-पात्र रखा जाना चाहिए। अगर ५० घर में सर्वोदय-पात्र हैं और ५० में नहीं हैं तो सर्वोदय-पात्रवाले कहेंगे कि हमारे घर में तो सर्वोदय-पात्र है, आप के घर में है? इस तरह तो अहंकार पैदा होगा ही। सभी के घर में सर्वोदय-पात्र होने से कौन किस को कहेगा? इस तरह अहंकार-निवृत्ति होने से नारायणी शक्ति आ जाती है।

यही है मेरी महत्त्वाकांक्षा और मुझ भक्त की प्रार्थना। भक्त के मुँह से सदा 'सर्व' की ही बात निकलती है 'असर्व' की नहीं। इसलिए मेरी बात भक्ति की बात है, उसमें महत्त्वाकांक्षा कुछ भी नहीं है। भक्तों ने तो गाया है :

'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।'

सभी लोग सुखी हों और सबका कल्याण हो। यह बात छोटी बात है। परन्तु बड़ी बात लेकर कुछ को आकर्षित करने के बजाय छोटी बात लेकर सभी को आकर्षित करने में परमेश्वर प्रसन्न रहते हैं। ◆◆◆

सबार (कश्मीर) २६-५-'५९

जम्मू-कश्मीर भारत की इज्जत बढ़ाये

हम चाहते हैं कि गाँव-गाँव की सेवा के लिए लोग निकलें। अपने घर की तो सभी देखते हैं, लेकिन गाँव की देखने के लिए कोई आगे आये। इस तरह जब गाँव की सेवा करनेवाले निकलेंगे, तभी गाँवों की तरक्की होगी। हम जगह-जगह देखते हैं कि स्कूलों की दीवालों पर पंचवर्षीय योजना में भारत की तरक्की की तस्वीरें टँगी रहती हैं। लेकिन तरक्की एक बात है और तरक्की की तस्वीर दूसरी बात। कुआँ एक बात है और कुएँ की तस्वीर दूसरी बात है। कुएँ में पानी होता है, तस्वीर में नहीं। दिल्ली में बैठकर बड़े-बड़े दिमागवाले सारे भारत के लिए 'पाँचसाला' योजना बनाते हैं। लेकिन उनके दिमाग कितने ही बड़े क्यों न हों, कुल देश की योजना वे नहीं कर सकते। हर गाँव की हालत वे नहीं जानते। एक पंचवर्षीय योजना खत्म हुई, दूसरी चल रही है, फिर भी बेकारी दिनदिन बढ़ रही है। दुनिया की ऐसी अजीबोगरीब हालत है कि बेकारी भी बढ़ती है और योजना भी चलती है। डॉक्टर भी बढ़ते हैं और बीमारियाँ भी बढ़ती हैं। सूरज का प्रकाश भी फैल रहा है और अंधेरा भी बढ़ रहा है। इसका कारण यही है कि गाँव-गाँव के लोग अपनी योजना नहीं बनाते।

सरकारी मदत किसे मिलती है?

होना तो यह चाहिए कि गाँव-गाँव के लोग योजना बनायें और सरकार उन्हें मदद दे। सरकार की योजना का लाभ उन्हीं को मिलता है, जो मदद चूस सकते हैं। बड़ों को ही मदद मिलती है, गरीबों को नहीं। यद्यपि हम चाहते हैं कि गरीबों को मदद मिले, लेकिन वे पाते नहीं। दुनिया में कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो माँगने की भी ताकत नहीं रखते। आसाम में अकाल पड़ा था,

वहाँ मदद का काम करने के लिए गये हुए एक गुजराती भाई हमसे मिले। हमने उनसे पूछा कि 'अकाल में लोगों को मदद करनेवाले मनुष्य में कौन-से गुण होने चाहिए?' उन्होंने जवाब दिया कि "उसका दिल सख्त होना चाहिए, क्योंकि वहाँ हर कोई माँगने आता है और रोता है तो आपको लगता है कि जो रोया, उसे मदद दी जाय। लेकिन जो वास्तव में दुःखी मनुष्य है, जिसे मदद की सख्त जरूरत होती है, वह माँगने के लिए आता ही नहीं। फिर आपके पास ज्यादा पैसा तो होता नहीं है, इसलिए जो आये, उसे मदद देते चले जायँ तो असली गरीब के पास पहुँचने के पहले ही आपका पैसा खत्म हो जायगा। इसलिए आप अगर सख्त दिलवाले हों तो रोनेवालों का रोना सुनकर न पसीजेंगे। फिर असली दुःखी मनुष्य को ढूँढकर मदद दी जा सकती है। वह बेचारा तो बेजबान होता है। यहाँ तक कि आप उसके गाँव में आये हैं, इसका भी उसे पता नहीं चलता। इसलिए उसे ढूँढकर मदद देनी पड़ती है।"

भाखरा-नांगल 'तीर्थ' कब?

भाखरा-नांगल बन रहा है तो उसका पानी उन्हीं को मिलेगा, जो जमीन के मालिक हैं। जो भूमिहीन हैं, उन्हें कुछ नहीं मिलेगा। कहा जाता है कि पानी मिलेगा तो फसल बढ़ेगी, जिससे सबको लाभ मिलेगा। ऊपर से पानी गिरता है तो नीचे जमीन में जाता ही है। लेकिन चट्टान हो तो नीचे जमीन में कुछ भी पानी न जायगा। इसलिए केवल उत्पादन बढ़ा तो गरीबों को कुछ-न-कुछ मिलेगा, यह मानना अपने आप को ठगना है, आत्म-वंचना है। इसलिए सीधे गरीब को ढूँढकर उसे मदद देनी चाहिए। पंचवर्षीय योजना में यह नहीं हो रहा है, यह बात स्वयं श्री डे कहते हैं और हमने भी जगह-जगह घूमकर इसका अनुभव किया है।

पं० नेहरू कहते हैं कि 'भाखरा-नांगल तीर्थस्थान है'। हमने कहा कि वह तीर्थस्थान बनेगा, बशर्ते कि जिन्हें पानी मिलेगा, उनकी जमीन का छठा हिस्सा गरीबों के लिए दान में मिले। इसमें देनेवाला नुकसान का भागी न होगा, क्योंकि पानी मिलने से उत्पादन बहुत बढ़ जायगा। कहा जाता है कि एक करोड़ एकड़ जमीन को उससे पानी मिलेगा। अगर उसका छठा हिस्सा याने १६ लाख एकड़ जमीन दान में मिली तो बहुत बड़ी बात हो जायगी। अगर सरकार इस तरह दान की शर्त रखती तो फिर पंजाब में 'उन्नति-कर' (betterment levy) के सवाल पर जो हो-हल्ला मचा, वह न मचता। इसमें गरीबों को जमीन मिलती तो कम्युनिस्टों को भी वह मंजूर करना पड़ता। परंतु यह किसे सूझता है? जो गरीबों जैसा बनकर गरीबों में रहे, गरीबों के दुःख जाने, ऐसे—मुझ जैसे—को ही यह सूझता है। इसलिए दिल्ली में योजना बनने से गाँव की तरक्की नहीं होगी। तरक्की तो तब होगी, जब गाँव-गाँव में अपने गाँव का हित सोचनेवाले लोग निकलेंगे। गाँव के दुःखी, गरीबों का दुःख जानेंगे और सारे गाँववाले मिलकर दुःख मिटाने की योजना करेंगे। इस तरह गाँव-गाँव में सेवा का इन्तजाम होगा, तभी यह काम बनेगा।

यहाँ का दान आन्तरिक प्रेम का सूचक

हम जब यहाँ आये तो कितनों ने कहा कि यहाँ कि हालत अलग है। इसलिए हमने यहाँ कदम रखा तो डरते-डरते और भगवान की खूब प्रार्थना करते-करते। हमें लग रहा था कि न मालूम यहाँ के लोग हमारी बात कैसे मानेंगे। उन्हें हमारी बात जँचेगी या नहीं? हिंदुस्तान के दूसरे सूबों की तरह यहाँ खादी, ग्रामोद्योग, हरिजन-सेवा, कस्तूरबा ट्रस्ट आदि का कुछ काम भी नहीं हुआ था। इसलिए हमारे मन में शक था कि यहाँ अपना काम कैसे बनेगा? लेकिन हमें यहाँ आये चार दिन हुए। हमने देखा कि चार ही दिनों में कुल हवा बदल गयी। दानपत्रों की वर्षा शुरू हो गयी। ये दानपत्र बड़े कीमती हैं, क्योंकि यहाँ सरकार ने बाईस एकड़ का सीलिंग पहले ही बना लिया है। इसलिए जो दान मिल रहा है, वह २२ एकड़ के अंदर का ही है। जिन्होंने दान दिया, उन पर परमेश्वर की बड़ी कृपा होगी, क्योंकि इस दान में किसी प्रकार का दबाव नहीं है, इसमें केवल प्रेम है। यहाँ के लोगों ने ऐसा नहीं कहा कि सरकार ने तो सीलिंग बनाया है, अब क्यों दान माँगते हो? यह एक बहुत बड़ी बात है। ये दान दिल की गहराई से दिये जा रहे हैं, अंदर के प्रेम को बता रहे हैं।

सेवा के लिए उत्साह

हमने दो दिनों से यहाँ गाँव की सेवा के लिए सेवकों की माँग करना भी शुरू किया है। पहले दो दिन इस तरह माँगने की हिम्मत नहीं की, लेकिन जब माँगना शुरू किया तो काफी लोग नाम दे रहे हैं, जिनमें बहनें भी हैं। हमने देखा कि यहाँ भी दूसरे सूबों के जैसे ही प्रेम और त्याग करनेवाले इन्सान हैं। प्रेम से समझाया जाय तो हिंदुस्तान के लोग त्याग करने के लिए राजी हैं। परंतु समझानेवाले की जबान में ताकत होनी चाहिए। जिसने खुद त्याग किया हो और जिसके हृदय में प्रेम हो, उसीकी जबान में ताकत आयेगी। जिसने त्याग का मजा चखा है, वही दूसरों से कहेगा कि तुम भी यह मजा चखो।

गाँववालों का सत्संकल्प

इस गाँव के लोगों ने सभी भूमिहीनों को जमीन दी है और यहाँ एक आश्रम खड़ा करने का भी संकल्प किया है, जिसके लिए जमीन तथा संपत्ति भी मिली है। इस तरह यहाँ नये सिरे से एक समाज बन रहा है। परमेश्वर की प्रेरणा काम कर रही है। अब हमें संकल्प करना है कि हम अपने गाँव में ग्राम-स्वराज्य स्थापित करेंगे, जमीन की मालकियत मिटायेंगे, अपना कपड़ा गाँव में ही तैयार करेंगे। छुआछूत आदि सब भेद मिटा देंगे, प्रेम से रहेंगे। जो किसी को डराता नहीं और न किसी से डरता है, सब पर प्रेम करता है, ऐसे शख्स को मदद भगवान ऊपर-नीचे, अंदर-बाहर आदि सभी तरफ से करने के लिए तैयार खड़े रहते हैं। यकीन रखें कि ऐसे को कोई तकलीफ नहीं होती है। हमें आशीर्वाद दीजिये कि हमारी जम्मू-कश्मीर की यात्रा सफल हो और यहाँ का काम ऐसा बढ़े कि सारे भारत को गौरव महसूस हो कि जम्मू-कश्मीर ने भारत की इज्जत बढ़ायी। ◆◆◆

अनुक्रम

१. हम राज्यशक्ति की ओर बढ़ना चाहते हैं....
रामकोट ३१ मई '५९ पृष्ठ ४९३
२. भक्त की बात 'सर्व' की ही, 'असर्व' की नहीं
सांढासाल २६ अक्टूबर '५८ ,, ४९४
३. जम्मू-कश्मीर भारत की इज्जत बढ़ाये
सबार २६ मई '५९ ,, ४९५

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी।